



हमालयन ग्रफिऑन

प्रलिमिंस के लयि:

हमालयन ग्रफिऑन, गदिधुँ की प्रजातयिँ

मेनुस के लयि:

गदिधुँ के संरकुषण के प्रयास

चरुा में कुयुँ:

हल ही में असम में कुऑ हमालयन ग्रफिऑन की संदगिध वषिऑकुतता के कारण मृतयु हो गई ।



हमालयन ग्रफिऑन

परचिय:

- हमालयन ग्रफिऑन [वलुऑर](#) (जपिस हमालयुँससि) एसीपीडरडिी (Accipitridae) परविर से संबुधति है, जसिमें ईगल, बुलबुल और बाज भी शामिल हैं ।

- यह यूरोपियन ग्रिफॉन वल्चर जी फुलवस (G. Fulvus) से संबंधित है।
- गदिध की यह एक वशिष्ट प्रजाति है, जिसका सरि सफेद, पंख काफी बड़े तथा इसकी पूँछ छोटी होती है।
- इसकी गर्दन पर सफेद पंख होते हैं तथा चोंच पीले रंग की होती है साथ ही इसके शरीर का रंग सफेद जैसा (न कपूरी तरह से सफेद) होता है तथा पंख गहरे (लगभग काले) रंग के होते हैं।

■ सुरक्षा की स्थिति:

- [IUCN की रेड लिस्ट](#) : नकिट संकटग्रस्त (NT)।

■ आवास:

- हिमालयी गदिध ज्यादातर तबिबती पठार (भारत, नेपाल और भूटान, मध्य चीन और मंगोलिया) पर हिमालय में पाए जाते हैं।
- यह मध्य एशियाई पहाड़ों (पश्चिम में कज़ाखस्तान और अफगानिस्तान से लेकर पूर्व में पश्चिमी चीन तथा मंगोलिया तक) में भी पाया जाता है।
- कभी-कभी यह उत्तरी भारत में प्रवास करता है लेकिन इसका प्रवास आमतौर पर केवल ऊँचाई पर होता है।

गदिधों के लक्षण/वशिष्टताएँ:

■ गदिधों के वशिष्टताएँ:

- यह मरे हुए जानवरों को खाने वाले पक्षियों की 22 प्रजातियों में से एक है और ये मुख्य रूप से उष्ण-कटबिंधीय और उपोष्ण-कटबिंधीय क्षेत्रों में रहते हैं।
- ये प्रकृति के कचरा संग्रहकर्ता (Nature's Garbage Collectors) के रूप में एक महत्वपूर्ण कार्य करते हैं और पर्यावरण से कचरा हटाकर उसे साफ रखने में मदद करते हैं।
 - गदिध वन्यजीवों के रोगों पर नियंत्रण रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

■ भारत में पाई जाने वाली प्रजातियाँ:

- भारत में गदिधों की 9 प्रजातियाँ यथा- ओरिएंटल व्हाइट बैकड (Oriental White Backed), लॉन्ग बिल्ड (Long Billed), स्लेंडर-बिल्ड (Slender Billed), हिमालयन (Himalayan), रेड हेडेड (Red Headed), मसिर देशीय (Egyptian), बयिरडेड (Bearded), सनिरयिस (Cinereous) और यूरोशियन ग्रिफॉन (Eurasian Griffon) पाई जाती हैं।
 - इन 9 प्रजातियों में से अधिकांश के विलुप्त होने का खतरा है।
 - बयिरडेड, लॉन्ग बिल्ड और ओरिएंटल व्हाइट बैकड [वन्यजीव संरक्षण अधिनियम \(Wildlife Protection Act\)](#), 1972 की अनुसूची-1 में संरक्षित हैं। शेष 'अनुसूची IV' के अंतर्गत संरक्षित हैं।

खतरा :

- डाइक्लोफेनाक (Diclofenac) जैसे वषिकृत पदार्थ जो पशुओं के लिये दवा के रूप में प्रयोग किया जाता है।
- मानवजनित गतिविधियों के कारण प्राकृतिक आवासों का नुकसान।
- भोजन की कमी और दूषित भोजन।
- बजिली लाइनों से करंट लगना।

संरक्षण के प्रयास :

■ भारत द्वारा:

- हाल ही में पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री ने देश में गदिधों के संरक्षण के लिये एक ['गदिध कार्ययोजना 2020-25'](#) (Vulture Action Plan 2020-25) शुरू की।
- भारत में गदिधों की मौत के कारणों पर अध्ययन करने के लिये वर्ष 2001 में हरियाणा के पजौर में एक गदिध देखभाल केंद्र (Vulture Care Centre-VCC) स्थापित किया गया।
- कुछ समय बाद वर्ष 2004 में गदिध देखभाल केंद्र को अपग्रेड करते हुए भारत के पहले 'गदिध संरक्षण एवं प्रजनन केंद्र' (VCBC) की स्थापना की गई।
 - वर्तमान में भारत में नौ गदिध संरक्षण एवं प्रजनन केंद्र हैं, जिनमें से तीन [बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी \(Bombay Natural History Society-BNHS\)](#) द्वारा प्रत्यक्ष रूप से प्रशासित किये जा रहे हैं।

■ अंतर्राष्ट्रीय:

○ 'SAVE' (एशिया के गदिधों को विलुप्त से बचाना):

- यह दक्षिण एशिया के गदिधों की दुरदशा में सुधार के लिये संरक्षण, अभियान और वित्तपोषण संबंधी गतिविधियों की देख-रेख एवं समन्वय हेतु समान विचारधारा वाले क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का संघ है।
- **उद्देश्य:** एक ही कार्यक्रम के माध्यम से तीन गंभीर रूप से महत्वपूर्ण प्रजातियों को विलुप्त होने से बचाना।



वर्षों के प्रश्न

गर्ध जो कुछ साल पहले भारतीय ग्रामीण इलाकों में बहुत आम हुआ करते थे, आजकल कम ही देखे जाते हैं। इसके लिये ज़म्मेदार है (2012)

- (a) नई आक्रमक प्रजातियों द्वारा उनके घोंसले का वनिश
- (b) पशु मालकों द्वारा अपने रोगग्रस्त मवेशियों के इलाज हेतु इस्तेमाल की जाने वाली दवा
- (c) उपलब्ध भोजन की कमी
- (d) व्यापक और घातक बीमारी।

उत्तर: (b)

स्रोत: डाउन टू अर्थ

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/himalayan-griffons>

